भारत में बनेगा पहला दो हजार मेगावाट बिजली पैदा करने वाला थर्मल पावर प्लांट

भारत, जर्मनी और आस्ट्रेलिया सरकार के सहयोग से दो साल में बनकर होगा तैयार

आबू रोड, 21 अक्टूबर, निसं। बिजली की खपत उसके उत्पादन की संभावनाओं में एक और नया आयाम जुड़ने की तैयारी में हैं। सूर्य की रोशनी का पूरा उपयोग करते हुए भारत, जर्मनी, आस्ट्रेलिया सरकार के सहयोग से वर्ल्ड रिन्यूवल स्प्रीचुअल ट्रस्ट तथा ब्रह्माकुमारीज संस्था मिलकर शांतिवन के निकट 55 एकड़ में भारत का पहला थर्मल पावर प्लांट (**इंडिया वन थर्मल पावर प्लांट)** का निर्माण करेगी जिससे दो हजार मेगावाट की विजली पैदा की जा सकेगी। यह अपने आप में एक अनोखा और नया उपक्रम है जिससे सूर्य की रोशनी से लगातार विजली पैदा की जा सकेगी।

इस कार्यक्रम के शिलान्यास के अवसर पर इस बड़े प्रोजेक्ट का ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, वर्ल्ड रिन्यूवल स्प्रीचुअल ट्रस्ट के ट्रस्टी ब्र0 कु0 निर्वेर, ब्र0 कु0 रमेश, प्रोजेक्ट के डायरेक्टर तथा इंजिनियर जर्मनी के गोलू पिल्स, तकनीकी इंजिनियर जयसिम्हा ने प्रोजैक्ट का शिलान्यास किया।

65 करोड़ की लागत से दो साल में बनकर तैयार होने वाले इस प्रोजेक्ट के बारे में बताते हुए जर्मनी के सौर ऊर्जा इंजिनियर गोलू पिल्स ने कहा कि बाढ़ और सूखा की स्थिति में भी बिजली की खपत को पूरा किया जा सकेगा। राजस्थान में सूर्य की रोशीन की पूरी उपलब्धता है जिसका उपयोग करते हुए स्टीम बनेगी और स्टीम पाईप द्वारा टर्बाइन मशीन में दबाब डालेगी जिससे बिजली पैदा होगी। तकनीकी जानकारी देते हुए गोलू पिल्स ने बताया कि सूर्य की रोशनी को एकत्रित कर पानी को स्टीम में बदलने के लिए 768 कांच की डिश होगी। जिसका क्षेत्रफल 46000 वर्ग मीटर में होगा। इस प्रोजेक्ट में 12 मोडयूल्स होंगे तथा प्रत्येक मोडयूल में 64 डिश लगी होगी। सूर्य जैसे-जैसे घूमेगा वैसे-वैसे रिफलेक्टर आटो टाईमर की सहायता से डिश स्वचालित होकर सूर्य की रोशनी को इकटठा करती रहेगी। यह डिश साठ प्रतिशत स्टेडिंग मोड में होगी तथा चालीस प्रतिशत स्लीपिंग मोड में होगी।

इससे बनने वाले स्टीम पावर का प्रेशर 8000 किलो पर घंटे की दबाव से टर्बाइन पर दबाव डालेगा जिससे टबाईन मशीन दो हजार मेगावाट विजली पैदा करेंगी। इसके अलावा इसके द्वारा एक लाख लीटर गर्म पानी भी किया जा सकेगा। जो उपयोग में लाया सकता है।

कहॉ से आये मशीनी उपकरण: सभी मशीनी उपकरण अभी भारत में ही उपलब्ध होने लगे हैं। जो सहजता से उपलब्ध हो जायेंगे। इसमें से कुछ उपकरण विदेशों से आयातित होते हैं परन्तु वे भारत में मिल जाते हैं।

कितने लोग करेंगे काम: इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में पचास से सौ कारीगर लगातार दो साल तक काम करेंगे। जिसकी अगुवाई जर्मनी से आये तकनीकी इंजिनियर स्कैफ्लर वल्फ किंग करेंगे। इसके साथ ही गोलू गोलू पिल्स, ब्र0 कु0 जयसिम्हा भी इसमें सहयोगी होगें।

इस अवसर पर देश-विदेश के सैकड़ों लोग मौजूद थे। संस्था प्रमुख दादी जानकी ने इस प्रोजेक्ट की सम्पूर्ण सफलता के लिए प्रोजैक्ट की पूरी टीम को बधाई दी तथा शिघ्र ही पूरा होने की आशा जताई। संस्था के मीडिया प्रवक्ता ब्र0 कु0 करूणा, कार्यकारी अधिकारी ब्र0 कु0 मृत्युंजय, ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी, ब्र0 कु0 मुन्नी, शांतिवन प्रबन्धक ब्र0 कु0 भूपाल, जर्मनी की ब्र0 कु0 सुदेश, अमेरिका की ब्र0 कु0 मोहिनी तथा बड़ी संख्या में देश-विदेश के लोग उपस्थित थे।

फोटो, 21एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5 फीता काटकर थर्मल पावर प्लांट प्रोजेक्ट का शुभारम्भ करते अतिथि, सभा में उपस्थित देश-विदेश के मेहमान, थर्मल पावर प्लांट का रूप।